धमभ्रष्ट से धमनष्ट

सूचना और प्रोद्योगिकी के युग म संचार और यातायात के ऐसे साधन बने ह कि आज गाँव म बैठा व्यक्ति पूरे विश्व से जुड़ जाता है, विश्व की गतिविधियों का जानकार हो जाता है, परन्तु हर वास्तु, व्यवस्था को नजदीक ले आने वाला विज्ञान, व्यक्ति को व्यक्ति के दिल के नजदीक नहीं ला सका है । बस यह एक आश्चयजनक बात रही हुई है । लगता है, दुनियां फिर से सोने की लंका बन गई है जहाँ भौतिक सुख -सम्पन्नता और प्रकृति पर प्रभुत्व तो है लेकिन मानव मन की विकृतियां बरक़रार ही नहीं बल्कि वृद्धि को भी पाती जा रही ह । बेशक, विज्ञान और तकनीकी विकास ने मानव मन की अनेकानेक मान्यताओं को तोड़ डाला है, व्यवहारों को बदल दिया है, फिर भी आश्चय की बात है कि अंधश्रद्धा कम होने के बजाए बढ़ती जा रही है ।

जीवन निमाण म उपयोगी ह धम के नीति - नियम

वैसे तो जीवन और जगत से सम्बंधित सत्यों का बोध कराने वाला धम, मानव के विकास म बधारूप नहीं है, लेकिन आत्मा, परमात्मा, स्वग, नरक आदि से सम्बंधित गलत मान्यताएं और अंधश्रद्धा बधारूप अवश्य ह । जब धम के नाम पर किया जाने वाला दंभ और वाह्याचार हमारी जीवन पद्धति, रीति- नीति को शुभ और श्रेष्ठ नहीं बनाता तब सबके मन म धम के प्रति संशय और प्रश्न उठने लगते ह । धम को मानने वाले लोग जब अधम का व्यवहार करते ह तो स्वाभाविक है कि लोग धम से किनारा करने लगते ह । जैसे सड़क पर चलने वाले वाहनों के लिए ट्रेफिक सिग्नल को मानना महत्वपूण है, न मानने से दुघटना होती है, ऐसे ही श्रेष्ठ जीवन निमाण म उपयोगी सिग्नल ह धम के नीति -नियम । उन्ह तोड़ने से अपराध ही होते ह ।

धम साधन है आत्मशुद्धि का

विश्व का वतमान दिखा रहा है कि धम अपने मूल ध्येय से विचलित होता जा रहा है । हर धम म अनेक संप्रदाय, मठ, पंथ बन गए ह और वे आपस म वैर- वैमनस्य बरतने लगे ह । वास्तव म धम तो एक साधन है आत्मशुद्धि और परमात्मा की प्राप्ति का, परन्तु धम के नाम पर धमान्धता और धमजुनून की जो अति हो रही है उससे तो धमभ्रष्ट -कमभ्रष्ट समाज का स्पष्ट दशन हो रहा है । इसी कारण से आज का युवा पीढ़ी और शिक्षित वग धर्माविमुख हो पथभ्रष्ट हो रहा है । वो अध्यात्म के सत्यों को भी नहीं जानना चाहता । मानव जीवन भोगवादी -भौतिकवादी, अनैतिक- अश्लील बनता जा रहा है ।

धम का अथ है गुणां को धारण करना

हम कह सकते ह कि हम धमभ्रष्ट हो चुके ह । धम का अथ हा है गुणां का धारणा करना । हम धम को तो मानते ह परन्तु उसको कम म, आचरण म नहां लाते ह । संसार अनादि काल से चलता हा आ रहा है, चलता हा रहेगा, लेकिन मूल तथ्यां म भटक जाना हा भ्रष्ट होना कहा जाता है । फल बाहर से साबुत हा रहता है लेकिन अन्दर से सड़ने से वह अपने मूल गुणां जैसे कि रस, स्वाद, सत्व, सार से विकृत हो जाता है । इसी प्रकार धम के नाम पर कम -काण्ड बहुत चल रहे ह लेकिन हम मूल ध्येय से, सत्पथ से भ्रष्ट हो गए ह । यह धम -वृधि नहां है, विस्तार और विकृति है । बस, हम धमनष्ट होने का स्थिति का ओर अग्रसर ह । धमभ्रष्ट होना हा धमनष्ट होने का स्थिति का संकेत देता है । इस धमभ्रष्ट स्थिति से हमने अपने आपको नहां उबारा, तो सवनाश का स्थिति बन हा जाएगी ।

धम का सम्बन्ध आत्मा से है, शारीर से नहां

कोई भी चीज प्रथम अवस्था म अपने सत्य स्वरुप म होती है फिर साधारण, सामान्य और धीरे -धीरे रसहीन, सत्वहीन बनती जाती है और आखिर नष्ट हो जाती है । ऐसी हा गति और स्थिति धम का हमारे जीवन म हो रहा है । धमभ्रष्ट से धमनष्ट का प्रक्रिया के दौरान जो लोग जीवन के, संसार के मूल, अचल, सवमान्य -सनातन सत्यां को समझ- परख लेते ह, कम-व्यवहार म धारण कर लेते ह और इस महापरिवतन के, हलचल के वातावरण म भी द्रढ़ता से सत्यां के धारणास्वरुप बने रहते ह वे हा फिर धर्मादय यानि सत्धम का नींव बन जाते ह । धमश्रेष्ठ -कमश्रेष्ठ आत्माएं दूसरां के लिए अनुकरणीय मिसाल बन जाती ह । वास्तव म धम का सम्बन्ध आत्मा से है, स्थूल शारीर से नहां । उस अथ म स्वधम, आत्मधम का बात हम कर रहे ह । आत्मधम, आत्मा के मूल गुणां के प्रति हा ध्यान खिंचवाता है । अपने अनादि, शुद्द, सत्य, पवित्र गुणां का स्वरुप बनना हा धमाचरण कहा जाता है ।

कई लोग जीवन म नैतिक मूल्यां का धारणा को महत्त्व देते ह लेकिन नैतिकता का आधार तो आध्यात्मिकता है । वास्तव म ये गुण और मूल्य, सूक्ष्म अनुभूतियाँ ह, आत्मा का स्थिति ह । आत्मा गुण धारण करती है और परमात्मा गुणां का अनादि स्त्रोत, सागर, अखुट भंडार है । जब तक परमात्मा से हम दिल-दिमाग से अथात मन-बुद्धि, विवेक एवं भावना से नहां जुड़ते, हम स्थायी एवं प्रभावी रूप से गुणां का धारणा नहां कर पाते ह ।

मानव जीवन के नैतिक, चारित्रिक, सामाजिक, मानवीय जो भी मूल्य ह, वे चैतन्य आत्मा के मूलभूत सात गुणां का सम्मिश्रण ह । हमारे आंतरिक-आत्मिक गुणां का विकास होते हा भ्रष्टता और विकृतियां विदाई लेने लगती ह । प्रकाश हो। ने मात्र से अंधकार समाप्त हो जाता है । ऐसे हा सत्य का धारणा से निकृष्ट्ता, भ्रष्टता समाप्त हो जाती है । आवश्यकता है आत्माभिमुख,

पमत्माभिमुख बनने का अभ्यास निर्यामित रूप से करने को । स्वाभाविक बात है कि शुरुआत हम स्वयं से हो कर । नित्य शांत, स्वच्छ स्थान पर बैठकर, अंतमुखी बनकर स्वयं के शुद्द आत्मा स्वरुप को गहराई से महसूस कर और परमशक्ति परमात्मा को

यथाथ रूप से जान-पहचान कर जिगरी, अनन्य प्रेमभाव से उनके साथ योगयुक्त हो मनोमिलन मनाएं ताकि आज के धमनष्ट को कगार पर खड़े समाज म फिर से सत्धम को आदि का आधार हम बन सक ।

ब्रह्माकुमारी गीता, शांतवन

****